



FuturePointIndia.com  
(फ्यूचर पॉइंट द्वारा रचित)

# ज्योतिष कविज



संस्करण: अंग्रेजी | हिन्दी

मंगलवार, अगस्त 21, 2012

मुखपृष्ठ | आपके विचार | हमसे मिलिए

## चैनल

- राशिफल
- ज्योतिष संस्था *नया*
- ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

## वास्तु भवन निर्माण

पं. गोपाल शर्मा (बी. ई.)

ईशान्यां देवतागेहं पूर्वस्यां स्नान-मंदिरम्।  
आग्नेयां पाकसदनं भंडारागारमंतरे।।

आग्नेयपूर्वयोर्मध्ये दधिमंथनमंदिरम्।  
अग्निप्रेतेशयोर्मध्ये आज्यगेहं प्रशस्यते।।

याम्यनैऋत्योर्मध्ये पुरीषत्याग-मंदिरम्। नैऋत्यांबुपयोर्मध्ये  
विद्ययाभ्यास-मंदिरम्।।

पश्चिमानिलयोर्मध्ये रोदनार्थं गृहं स्मृतम्।। वायव्योतयोर्मध्ये रतिगेहं  
प्रशस्यते।।

उत्तरैशानयोर्मध्ये औषधार्थं तु कारयेत्।। नैऋत्यां सूतिकागेहं नृपाणां  
भूमिमिच्छताम्।।

प्राचीन ग्रंथ 'विश्वकर्मा प्रकाश' में भवन निर्माण वास्तु सिद्धांत के  
अनुसार किस प्रकार किया जाए, यह बखूबी समझाया गया है।

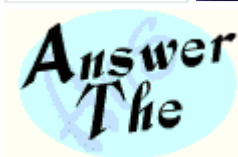
उपर्युक्त श्लोक को हम इस चित्रा के माध्यम से समझेंगे:

माध्यम	उ.	ईशान
पशु एवं अन्न भंडार	रतिगृह	भंडारगृह
शौक गृह		अमृत गृह
भोजन गृह		स्नानगृह
अध्ययन कक्ष		गति-मन्थन मंथनगृह
शस्त्रागार	शौ.	शयन कक्ष
	शयन	सूत मंथन एवं पीछने का स्थान
	रतिगृह	
मिश्रण	द.	आग्नेय

माध्यम	उ.	ईशान
पशु एवं अन्न भंडार	रतिगृह	भंडारगृह
शौक गृह		अमृत गृह
भोजन गृह		स्नानगृह
अध्ययन कक्ष		गति-मन्थन मंथनगृह
शस्त्रागार	शौ.	शयन कक्ष
	शयन	सूत मंथन एवं पीछने का स्थान
	रतिगृह	
मिश्रण	द.	आग्नेय

## साइट ढूँढिए

go



## आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक  
जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ  
☐ नहीं  
☐ पता नहीं

वोट

[पिछले माह के परिणाम](#)

If you are not able to  
view the page properly  
then **Download Hindi  
Font.**

## पंजीकृत सदस्य

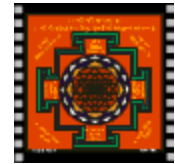
यूजर आईडी

पासवर्ड

go

[पंजीकरण](#) | [संशोधन  
पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

## ज्योतिष सामग्री



- [जोड़िए](#) हमारी  
साइट को अपने  
Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित  
लियो गोल्ड, विंडो पर  
आधारित जन सामान्य के  
प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण  
ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है। ....  
और

की आवश्यकता नहीं रहती। पहले गाय, भैंस, घोड़े, पशु आदि रखे जाते थे। उनके स्थान पर अब हम बच्चों का कक्ष वायव्य क्षेत्रा में बना सकते हैं। अलग से औषध गृह बनाने के बदले औषधियां पूजा गृह के उत्तर में रखनी चाहिए। आधुनिक युग में संशोधित वास्तु अनुकूल भवन का नक्शा ऊपर दिये गये सिद्धांत के अनुरूप बनाना चाहिए।



आजकल जगह की कमी और भूमि की बढ़ती हुई कीमतों के कारण प्रायः छोटी-छोटी भूमि आम आदमी को उपलब्ध होती है। जगह की कमी को देखते हुए यदि हम वास्तु सिद्धांत के अनुसार भवन के नक्शे को पिफर से संशोधित करें, तो वह इस प्रकार शुभ रहेगा:

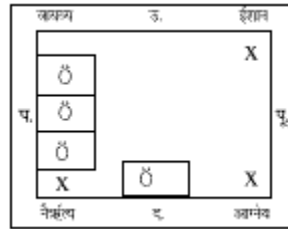
लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

वायव्य		उ.	ईशान
अतिथिगृह	स्नानगृह कक्ष	पूजागृह	
बच्चों का शयनकक्ष	बोव का शयन	स्नानघर	पू.
मुख्य शयनकक्ष	शयनकक्ष	रसोई	
नैऋत्य	द.	आग्नेय	

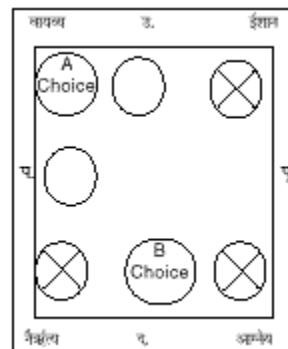
भवन का नक्शा बनाते समय निम्न बातों का खास ध्यान करें कि :

1) शौचालय भूल कर भी ईशान, आग्नेय और नैऋत्य स्थान में न हो। इसका स्थान दक्षिण या नैऋत्य और दक्षिण के मध्य में भी ठीक रहेगा।

यह स्थान उपयुक्त है।  
यह स्थान गलत है।

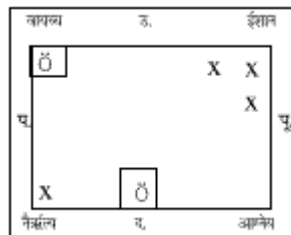


2) ऊपर पानी की टंकी ईशान या नैऋत्य में नहीं होनी चाहिए। पानी की टंकी का वायव्य दिशा में होना उत्तम है। दक्षिण दिशा में भी टंकी रखी जा सकती है।



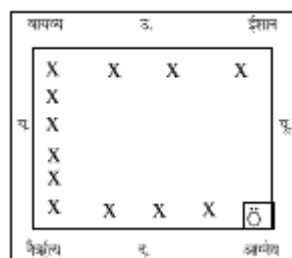
;3) सेप्टिक टैंक भूल कर भी ईशान क्षेत्र या नैऋत्य कोण में न बनवाएं। इससे घर में रहने वालों का अमंगल निश्चित है।

सेप्टिक टैंक के लिए सबसे उचित स्थान दक्षिण या वायव्य हैं, दक्षिण में थोड़ा आग्नेय की ओर।



;4) बिजली का मीटर बक्सा ईशान, उत्तर-पश्चिम, नैऋत्य या दक्षिण में न लगाएं। बिजली अग्नि का ही प्रतिरूप है। इसलिए इसका उचित स्थान आग्नेय कोण है।

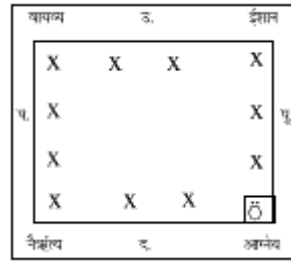
वायव्य इसका दूसरा विकल्प है, पर वह तभी जब आग्नेय कोण में बिजली का मीटर बक्सा लगाना बिल्कुल संभव न हो।



;5) रसोई घर ईशान, नैऋत्य या दक्षिण में बिल्कुल न बनाएं। इससे घर में अनावश्यक क्लेश, मानसिक अशांति होगी। घर की स्वामिनी रोगों से पीड़ित होगी और गृह स्वामी को अनावश्यक खर्चों का सामना करना पड़ सकता है।

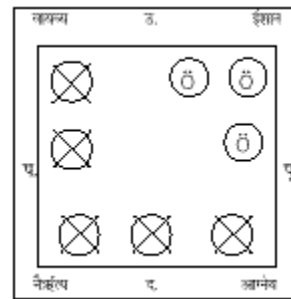
पश्चिम और वायव्य में रसोई घर बनाने से भी घर के सदस्यों में कलह और मानसिक तनाव का माहौल बना रहता है।

दूसरे शब्दों में, रसोई घर के लिए सबसे उपयुक्त स्थान आग्नेय कोण ही है। इस स्थान पर रसोई बनाने से घर की स्वामिनी स्वस्थ और प्रसन्न रहेगी तथा सभी सदस्यों के लिए भी आग्नेय कोण में पाकशाला का होना अति शुभ होता है।



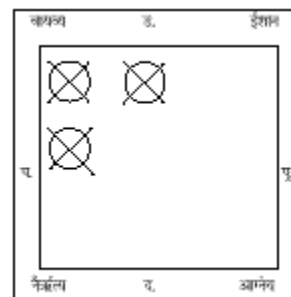
6) जेट पंप, बोर वेल, कुआं, भूगत पानी की टंकी, पानी का मीटर सिर्फ ईशान कोण में ही रखें—

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशः, त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ।  
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च शौर्यम् ।।

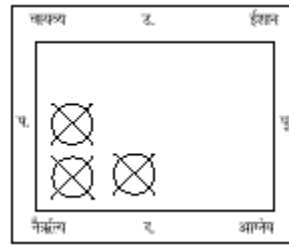


इस प्रकार का कुआं, बोर वेल, भूगत पानी की टंकी अति शुभ होंगे ।  
इसके अतिरिक्त यदि कुआं, बोर वेल अन्य स्थानों पर हो तो पफल इस प्रकार होगा :

1) उत्तर दिशा में वायव्य की ओर या पश्चिमी दिशा में वायव्य की ओर बोर वेल से हमेशा कलह, क्लेश, झगड़े और धन हानि होती है ।

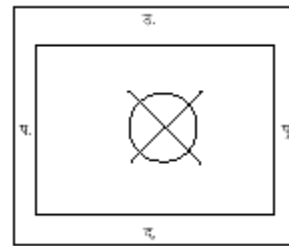


2) नैऋत्य, नैऋत्य पश्चिमी, नैऋत्य दक्षिणी में बोर वेल, भूगत पानी की टंकी से घर के सदस्यों में निरंतर झगड़ा, तनाव और मुकद्दमेबाजी होती है । खराब स्वास्थ्य, अत्यधिक व्यय और दवाओं में खर्चा आदि का योग बना रहता है । शत्रु भय निरंतर बना रहता है । नैऋत्य में बनाने से गृह स्वामी की मृत्यु हो सकती है ।



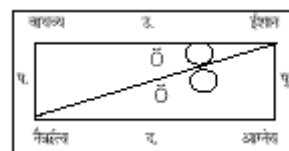
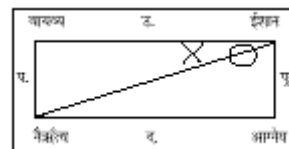
;3) आग्नेय स्थान पर बोर वेल, कुआं आदि होने से गृह स्वामी उच्च रक्तचाप से पीड़ित रहता है और पुत्रों पर भारी होता है।

;4) भूखंड के मध्य, बीचों बीच बोर वेल कुआं आदि बनाना अशुभ है। गृह स्वामी को निरंतर कलह प्राप्त होता है। निरंतर धन का नाश होता है और गृह स्वामी कंगाली की स्थिति में आ जाता है।

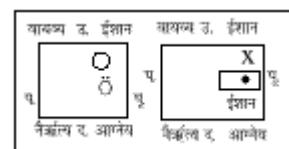


वैसे ईशान क्षेत्र में कुआं बनाते समय ध्यान रखे :

1) कुआं ईशान और नैऋत्य कोण की मध्य रेखा के बीच में न आए, बल्कि यह इस रेखा के दायीं या बायीं तरफ रहे।



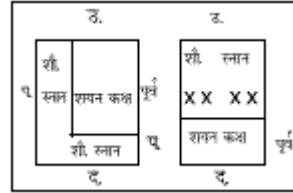
2) भूगत टंकी अंदर से चाहे चौकोर हो, किंतु भूमि के ऊपर उसके मुंह का आकार गोल हो। चौकोर आकार ईशान कोण पर वक्री प्रभाव डालता है, जो अशुभ होता है।



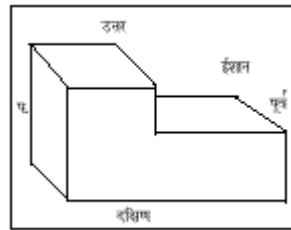
7) आजकल लगा हुआ शौचालय-स्नानागार-शयन कक्षों का रिवाज

है यानी कि स्नानघर में ही शौचालय का प्रावधान रहता है।

इस प्रकार के शौचालय-स्नानागार शयन कक्ष की दक्षिण और पश्चिम दिशा में रख सकते हैं। परंतु इन्हें शयन कक्ष की उत्तर दिशा में रखने से बचना चाहिए।



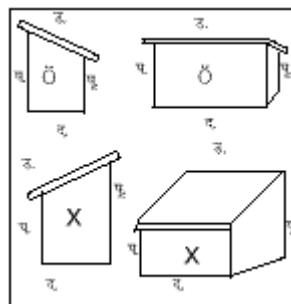
8) पफर्श की तरह मकान की छत की ढाल भी उत्तर, पूर्व या ईशान की तरफ होनी चाहिए और बरसात का पानी ईशान क्षेत्रा की ओर बहना चाहिए, यानी छत से बरसाती पानी की नालियां ईशान क्षेत्रा की ओर होनी चाहिए। स्नानागार और रसोई की ओर से भी पानी ईशान क्षेत्र की ओर ही बहना चाहिए।



9) उत्तर दिशा कुबेर का स्थान है। इसलिए कीमती सामान, तिजोरी, आभूषण का कक्ष भी उत्तर दिशा में और कक्ष का दरवाजा भी उत्तर दिशा में होना चाहिए।

10) भवन का नैर्ऋत्य भाग सबसे ऊंचा होना चाहिए और ईशान कोण सबसे नीचा रहना चाहिए।

11) आजकल ढाल वाली छतों का रिवाज है। यदि इस प्रकार की छत बनाएं, तो ढाल उत्तर या पूर्व दिशा की ओर ही हो। सिर्फ दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर ढाल न रखें।



---

[FuturePointIndia.com के बारे में](#) | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

ऊपर

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट